डी जी आर समाचार पत्र

खंड XI संख्या 1-2 जनवरी-जून, 2012

पश्चिम मिदनापुर जिले में मूँगफली की फसल पर मूल विक्षत सूत्रकृमि का ग्रसन

मूँगफली अनुसंधान निदेशालय के वैज्ञानिकों ने पश्चिमी मिदनापुर जिले (पश्चिम बंगाल) में मूँगफली के खेतों में कुछ अलग प्रकार के रोग के संबंध में प्राप्त सूचना के आधार पर उस इलाके का सर्वेक्षण किया। इस क्षेत्र में, निचली भूमि में खरीफ धान की कटाई करने के बाद दिसम्बर-जनवरी महीने में रबी में मूँगफली की बुवाई की जाती है। मई, 2012 में इस क्षेत्र का सर्वेक्षण करते समय, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय के वैज्ञानिकों ने मूँगफली में मूल विक्षत सूत्रकृमियों का ग्रसन देखा। खेतों में जमीन के छोटे भूभागों में पौधों में पीलेपन जैसे लक्षण दिखाई दिए। मृदा के संक्रमित खंडों में मूल विक्षत सूत्रकृमियों की आबादी 88/100 सीसी थी जबकि स्वस्थ खेतों मेंआबादी बहुत कम - लगभग 27/100 सीसी थी। संक्रमित पौधों में खूंटी (पेग) और फलियों पर धब्बे दिखाई दिए। इन फलियों में भी मूल विक्षत सूत्रकृमियों (प्रेटिलेंकुस प्रजाति) की मौजूदगी दर्ज की गई। फलियाँ विक्षत तथा अस्पष्ट हाशिये (मार्जिन) के साथ भूरे रंग की हो गई थीं।

संक्रममित क्षेत्र से मृदा के लिए गए नमूनों में जैव-नियंत्रण घटक ट्राइकोडर्मा प्रजाति के अतिरिक्त रोगजनक कवक (ऐस्पर्जिलस नाइजर और ऐस्पर्जिलस फ्लेवस) की प्रचुरता थी। मूल विक्षत सूत्रकृमि पादपों को कवक रोगजनक, विशेष रुप से नेक्रोट्रॉफिक कवक को पहले से ही प्रवृत्त करने के लिए जाने जाते हैं। सभी संबंधितों को सलाह दी गई कि वे संक्रमित क्षेत्र पर निगरानी रखें और न केवल सूत्रकृमियों को और अधिक फैलने से रोकने के लिए अपितु खेतों की सफाई करने के लिए भी उपयुक्त उपाय करें।

आदान: प्रसन्ना होलाजेर (वैज्ञानिक, सूत्रकृमिविज्ञान) एवं
कुलदीप एस. जादोंन (वैज्ञानिक, पादप रोग विज्ञान)

मूँगफली के खेत में सूत्रकृमियों से प्रभावित पीले-पौधे (गोल घेरे में)

सूत्रकृमियों के संक्रमण के कारण मूँगफली की फलियों पर चित्तियां

अंतर्वस्तु

पश्चिम मिदनापुर जिले में मूल विक्षत सूत्रकृमि का ग्रसन	1
अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना केन्द्रों का मृदा पोषण	2
बैठकें	3-4
प्रशिक्षण कार्यकम एवं कार्यशालाएँ	4-5
संस्थान के सेमिनार	6
वार्षिक खरीफ मूँगफली कार्यशाला	6
विशेष आगन्तुक	6
सम्मेलनों/कार्यशालाओं/सेमिनारों इत्यादि में भागीदारी	7
हमारे नए सहकर्मी	8
पदोन्नति	8
पुरस्कार	8
अतिथि	8

अखिल भारतीय समन्वित मूँगफली अनुसंधान परियोजना केन्द्रों का मृदा पोषण-एक मूल्यांकन

विभिन्न 'अखिल भारतीय समन्वित मूँगफली अनुसंधान परियोजना' से समबद्ध केन्द्रों के मृदा मूल्यांकन से संबंधित तथ्यों के संकलन के आधार पर निम्नलिखित व्याख्याएँ की गई हैं -

- ग्यारह केन्द्रों की मृदाओं, विशेष रुप से चिंतामणि, गयचुग और कादिरी केन्द्रों से, जहां मृदा अल्फीसोल किस्म की है, उसमें उच्च बल्क घनत्व एवं जल को रोकने की औसत कम क्षमता (डब्ल्यू. एच. सी.) तथा कम सूक्ष्मरंध्रता के रुप में अभिलक्षणा की गई। मृदा की भौतिक विशेषताओं में सुधार करने के लिए जैविक खाद का उपयोग करने की सिफारिश की जाती है क्योंकि इससे सूक्ष्मरंध्रता में वृद्धि होती है और इस प्रकार वल्क घनत्व कम होता है और अंततः सूक्ष्मरंध्रता तथा औसत डब्ल्यू. एच. सी. में वृद्धि होती है। कांके, चिंतामणि और भुवनेश्वर केन्द्रों में अम्लता की समस्या का समाधान करने के लिए, मृदा पीएच में वृद्धि करने के लिए उपयुक्त मात्रा में चूना (लाइम) का उपयोग करने की सलाह दी जाती है क्योंकि >6.0 पीएच वाली मृदाओं में मूँगफली की खेती करना लाभप्रद है नहीं
- बारह केन्द्रों में नाइट्रोजन की उपलब्धता कम पायी गई जो वर्ष प्रतिवर्ष उर्वरताहारी फसल चक्र या NO^{-3} की विक्षालन हानियों के कारण हो सकती है। नाइट्रोजन की संस्तुत खुराक (20-25 किलोग्राम N) की 125 प्रातिशत का उपयोग करके मृदाओं में इसकी कमी पर नियंत्रण किया जा सकता है।
- किसी भी केन्द्र में मृदा में फास्फोरस की मात्रा में कोई कमी नहीं पाई गई, इसलिए फास्फोरस का उपयोग संस्तुत मात्रा से अधिक नहीं किया जाना चाहिए।
- आमतौर पर मूँगफली की पैदावार करने वाले अधिकांश क्षेत्रों में पोटाशियम का उपयोग करने की सिफारिश नहीं की जाती है, लेकिन मृदाओं में सहज रुप से पोटाशियम के कम स्तरों के कारण अमरेली और राहुरी जैसे कुछ स्थानों में 30 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर की दर से MOP का उपयोग करने की सिफारिश की जाती है।
- धारवाड़, मैनपुरी, रायचुर, दुर्गापुरा, कांके और कादिरी में मृदाओं में सल्फर की कमी पाई गई, इसलिए जिप्सम (250 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर) का उपयोग इन क्षेत्रों में लाभकारी होगा।
- सभी केन्द्रों में जिंक, आयरन और बोरान की कमी दर्ज की गई, इसलिए उपयुक्त दरों पर इन पोषकों का उपयोग करने की सिफारिश की जाती है।

'आखिल भारतीय समन्वित मूँगफली अनुसंधान परियोजना' केन्द्रों के लिए क्षेत्रवार मृदा उर्वरता की स्थिति का प्रेक्षण

क्षेत्र (जोन)	केन्द्र	दर्ज की गई टिप्पणियां
जोन-1	मैनपुरी, हनुमानगढ़ दुर्गापुरा और लुधियाना	सल्फर की आपूर्ति करने के लिए जिप्सम का उपयोग, इष्टतम पैदावार के लिए अधिक पीएच वाली मृदा के शोधन और संस्तुत खुराक का 125 प्रतिशत महत्वपूर्ण हैं।
जोन-2	जूनागढ़, अमरेली, तालोड, उदयपुर और प्रतापगढ़	लाभकारी उपज प्राप्त करने के लिए नाइट्रोजन और सल्फर युक्त उर्वरकों की अपेक्षाकृत अधिक खुराक आवश्यक है।
जोन-3	खरगोन, जलगांव, अकोला और रत्नागिरि	इष्टतम उपज प्राप्त करने के लिए अधिक पीएच वाली मृदा का शोधन तथा नजाइट्रोजन एवं पोटाशियम उर्वग्कों की अपेक्षाकृत अधिक खुगक आवश्यक है।
जोन-4	मोहनपुर, इम्फाल, कांके और भुवनेश्वर	15-20 टन प्रति हैक्टेयर की दर से चूना (लाइम) द्वारा निम्न पीएच वाली मृदा के शोधन और सल्फर के उपयोग से इष्टतम फसल की प्राप्ति होगी।
जोन-5	वृद्धाचलम, अलियांगर, टिंडीवनम, जगीताल, कादिरी, तिरुपति, धारवाड, रायचुर, चिंतामणि और लातूर	बेहतर पैदावार के लिए सल्फर की स्थिति में सुधार करने के लिए N उर्वरक और जिप्सम की अपेक्षाकृत अधिक खुराक अनिवार्य है।

आदान: देबारती भादुड़ी (वैज्ञानिक, मृदा विज्ञान) एवं ए. एल. रत्नकुमार (प्रधान वैज्ञानिक व 'अखिल भारतीय समन्वित मूँगफली अनुसंधान परियोजना' समन्वयकर्ता)

अरुणाचल प्रदेश की निचली दीबांग घाटी के किसानों का प्रदर्शन एवं अभिविन्यास (ओरियेंटेशन) प्रशिक्षण के लिए मूँगफली अनुसंधान निदेशालय का दौरा

निचली दीबांग घाटी (अरुणाचल प्रदेश) से दो वैज्ञानिकों- कु. नानांग टमुट (गृह-विज्ञान) और श्री जिमी मिजे (मात्स्यिकी) के साथ आए किसानों के एक समूह को 24 से 29 मार्च, 2012 तक मूँगफली अनुसंधान निदेशालय में उन्नत मूँगफली उत्पादन प्रौद्योगिकियों और मूल्यवर्धन (वैल्यू-एडीशन) के संबंध में 6 दिन का प्रदर्शन एवं अभिविन्यास प्रशिक्षण दिया गया। इस कार्यक्रम की एक आदिवासी उप-परियोजना के रुप में परिकल्पना की गई थी और डॉ. टी. जे. रमेश, कार्यक्रम समन्वयकर्ता, किसान विकास केन्द्र, निचली दीबांग घाटी एवं डॉ. ए. एल. रत्नकुमार, प्रधान वैज्ञानिक (पादप प्रजनन), मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ ने इस कार्यक्रम का समन्वय किया।

उत्तर-पूर्वी पर्वतीय क्षेत्र में मूँगफली की खेती की संभावनाओं और संभाव्यताओं; इस क्षेत्र के लिए उपयुक्त उन्नत किस्मों; सतत उत्पादन के लिए कृषि पद्धतियों; कीट और रोग प्रबंधन; विपणन; और प्रभावकारी उपयोग के लिए मूल्य-वर्धन के संबंध में मूँगफली अनुसंधान निदेशालय के वैज्ञानिकों ने व्याख्यान दिए। मूँगफली अनुसंधान निदेशालय के दौरे के माध्यम से किसानों को जानकारी दी गई और उन्होंने जूनागढ़ के अन्य प्रगतिशील किसानों के साथ परस्पर चर्चा भी की। उन्हें पॉलीथीन मल्चिंग, ड्रप्स (ड्रिप) सिंचाई, फर्टिगेशन और कृषि उपकरणों के उपयोग जैसी उन्नत कृषि पद्धतियों की भी जानकारी दी गई। समापन सत्र में सभी प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किये गये।

मूँगफली अनुसंधान निदेशालय में प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु आए उत्तर-पूर्वी पर्वतीय क्षेत्र के किसान

बैठकें

पंचवर्षीय समीक्षा दल (क्यू.आर.टी.) की बैठक - मूँगफली अनुसंधान निदेशालय और 'अखिल भारतीय समन्वित मूँगफली अनुसंधान परियोजना' में अनुसंधान कार्य में हुई प्रगति और कार्यनिष्पादन की समीक्षा करने के लिए मूँगफली अनुसंधान निदेशालय के पंचवर्षीय समीक्षा दल की 2007-2011 की अवधि के लिए बैठक हुई। इस दल में निम्नलिखित सदस्य थे : डॉ. डी. एम. हेगड़े, पूर्व परियोजना निदेशक, तिलहन अनुसंधान निदेशालय, (अध्यक्ष): डॉ. एस. एन. निगम, प्रधान मूँगफली प्रजनक, इक्रीसैट, हैदराबाद; डॉ. एस. एस. मेहेत्रे, अनुसंधान निदेशक, महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ, राहुरी; डॉ. डी. वी. सिंह, पादप रोग विज्ञान विभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान; डॉ. पद्म राजू, अनुसंधान निदेशक, आचार्या एन. जी. रंगा कृषि विश्वविद्यालया, हैदराबाद; और डॉ. राधाकृष्णन टी., मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़।

मूँगफली अनुसंधान निदेशालय में चल रहे कार्यक्रमों और अन्य कार्यकलापों में हुई प्रगति की समीक्षा करने के लिए पंचवर्षीय समीक्षा दल की पहली बैठक 16 और 17 जनवरी, 2012 को मूँगफली अनुसंधान निदेशालय में हुई। तत्पश्चात, 15 और 16 फरवरी, 2012 को दल ने तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयम्बतूर का दौरा किया और 'अखिल भारतीय समन्वित मूँगफली अनुसंधान परियोजना' के वृद्धाचलम, अलियांगार, भवानीसागर, कदिरी, जगतल, रायचुर, धारवाड़ और चिंतामणि स्थित केन्द्रों में हुई प्रगति की समीक्षा की। 'अखिल भारतीय समन्वित मूँगफली अनुसंधान परियोजना' के दुर्गापुरा, हनुमानगढ़, उदयपुर, मैनपुरी, जूनागढ़, व्यारा, जलगां, राहुरी, शिरगांव और खरगोन स्थित केन्द्रों में हुई प्रगति की समीक्षा करने के लिए अगली बैठक 15 और 16 मार्च, 2012 को एस. के. आर. ए. यु., दुर्गापुरा, जयपुर में हुई।

9 अप्रैल, 2012 को इस दल की उड़ीसा कृषि और प्रैद्योगिकी विश्वविद्यालय (ओ.यू.ए.टी.), भुवनेश्वर, ओडिशा में हुई चौथी बैठक के दौरान 'अखिल भारतीय समन्वित मूँगफली अनुसंधान परियोजना' के सी.एस.ए.यू. एंड टी.; बिरसा कृषि विश्वविद्यालय (ब्री.ए.यू.), कांके; केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय (सी.ए.यू.), इम्फाल स्थित केन्द्रों और उड़ीसा कृषि और प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर तथा बिधान चन्द्र कृषि विश्वविद्यालय (बी.सी.के.वी.), मोहन नगर में नए खोले गए केन्द्रों में हुई प्रगति की समीक्षा की गई। पंचवर्षीय समीक्षा दल ने 24 से 26 अप्रैल, 2012 को आर.आर.एस, तिरुपति में हुई वार्षिक खरीफ मूँगफली कार्यशाला में भी भाग लिया और कार्यशाला के संचालन और अन्य पहलुओं की समीक्षा की। सिफारिशों और कार्यवाहियों पर विचार-विमर्श करने और उन्हें अंतिम रुप देने के लिए दल की अंतिम बैठक 22 और 23 जून, 2012 को तिलहन अनुसंधान निदेशलाय, हैदराबाद में हुई।

पंचवर्षीय समीक्षा दल और मूँगफली अनुसंधान निदेशालय के वैज्ञानिक

संस्थान अनुसंधान समिति (आई. आर. सी.) की बैठक – संस्थान अनुसंधान समिति की 58वीं और 59वीं बैठकें क्रमशः 30 जनवरी से 1 फरवरी 2012 तक और 14 से 16 मई, 2012 तक हुई। दोनों बैठकें डॉ. जे. बी. मिश्र, निदेशक, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय की अध्यक्षता में हुई। बैठकों के दौरान, अनुसंधान कार्य की परियोजना-वार प्रगति की समीक्षा की गई और आगामी मौसमों के लिए तकनीकी कार्यक्रमों को अंतिम रुप दिया गया। विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं के परियोजना अन्वेषकों ने अपनी-अपनी परियोजनाओं में किए गए कार्यों का उल्लेख किया और तत्पश्चात् कार्य की भावी योजनाओं का प्रस्ताव किया। समिति द्वारा अनुमोदन करने से पहले, कार्य की योजनाओं पर गहराई से विचार-विमर्श किया गया और जहां आवश्यक था वहां संशोधन किया गया। अध्यक्ष महोदय ने कहा कि कई नए वैज्ञानिकों ने संस्थान में कार्यभार ग्रहण किया है और नए वैज्ञानिकों के लिए कार्य योजना को अंतिम रुप देना होगा और 12वीं योजना के लिए नई परियोजनाएँ भी तैयार करनी होंगी। समिति ने 12वीं योजना के दौरान आरंभ की जाने वाली परियोजनाओं के शीर्षकों के संबंध में विचार-विमर्श किया। बढ़ती श्रमिक समस्या आदि जैसे अन्य मुद्दों पर भी चर्चा की गई।

अनुसंधान सलाहकार समिति (आर.ए.सी.) की बैठक– अनुसंधान सलाहकार समिति की 14वीं बैठक 13 और 14 अप्रैल, 2012 को निदेशालय में हुई। यह बैठक डा. जे. एच. कुलकर्णी की अध्यक्षता में हुई। अन्य सदस्यों नामतः डॉ. बी. वी. सिंह, अतिरिक्त महानिदेशक (ओ एंड पी) डॉ. जी. एस. जाधव, पूर्व अनुदेश निदेशक, मराठवाड़ा कृषि विश्वविद्यालय, परभनी, और डॉ. ए. एम. पारखिया, निदेशक (विस्तार), जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय ने इस बैठक में भाग लिया। परियोजना अन्वेषकों और सह-परियोजना अन्वेषकों ने चल रही अनुसंधान परियोजनाओं के संबंध में उल्लेख किया। प्रत्येक प्रस्तुति पर गहराई से विचार-विमर्श किया गया और यदि अपेक्षित था तो अनुसंधान सलाहकार समिति की टिप्पणियों को ध्यान में रखते हुए कार्य योजना में संशोधन किया गया। अध्यक्ष महोदय ने अपने समापन भाषण में और सदस्यों ने अपनी टिप्पणियों में मूँगफली अनुसंधान निदेशालय में किए गए अच्छे कार्य की सराहना करते हुए कुछ पहलुओं पर अनुसंधान कार्यों को नई दिशा देने की आवश्यकता का भी उल्लेख किया।

अनुसंधान सलाहकार समिति एवं मूँगफली अनुसंधान निदेशालय के वैज्ञानिक

प्रशिक्षण कार्यक्रम/कार्यशालाएँ

'पादप किस्मों और किसानों के अधिकारों का संरक्षण तथा डी.यू.एस. (DUS) परीक्षण के संबंध में अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम' (27-28 जनवरी, 2012)

पादप किस्मों और किसानो के अधिकारों का संरक्षण तथा डी.यू.एस. परीक्षण के संबंध में एक अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम' 27-28 जनवरी, 2012 को मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़ में आयोजित किया गया जो 'पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण' (पी.पी.वी. और एफ.आर.ए) द्वारा प्रायोजित किया गया था। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. आई. यू. ध्रुज (अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक, जूनागढ कृषि विश्वविद्यालय, जूनागढ़) थे तथा अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों में डॉ. रविकुमार (नेशनल इनोवेशन फ़ाउन्डेशन, अहमदाबाद) तथा डॉ. के. पी. रमेश (एन. डी. आर. आई. बंगलौर) भी उपस्थित थे। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल सत्रह प्रतिभागी सम्मिलित हुए। इसके अतिरिक्त, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय के सभी वैज्ञानिकों और तकनीकी अधिकारियों एवं कर्मचारीयों ने भी इस कार्यक्रम में सक्रिय रुप से भाग लिया।

'भारत में पादपों की किस्मों और किसानों के अधिकारों का संरक्षण अधिनियम की उत्पत्ति और विशेषताएँ', 'भारतीय संदर्भ में पेटेंटिंग बनाम पादपों की किस्मों और किसानों के अधिकारों का संरक्षण, भारत में पादपों की किस्मों और किसानों के अधिकारों के संरक्षण को बढ़ावा देने में नेशनल इनोवेशन फ़ाउन्डेशन की भूमिका और 'मूँगफली में डी.यू.एस. जैसे विभिन्न विषयों पर व्याख्यान दिए गए। प्रशिक्षण कार्यक्रम के अंत में सामान्य रुप से बौद्धिक संपदा अधिकारों (आइ.पी.आर.) और विशेष रुप से पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण के संबंध में कई जटिल आशंकाओं का समाधान किया गया।'

मूँगफली अनुसंधान निदेशालय में पादप किस्म एवं कृषक अधिकार संरक्षण तथा डी.यू.एस. परीक्षण में प्रशिक्षण

'बौद्धिक सम्पदा जागरुकता' के संबंध में कार्यशाला (20 मार्च, 2012)

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के आंचलिक प्रौद्योगिकी प्रबंधन यूनिट, केन्द्रीय कपास प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान (सी.आइ.आर.सी.ओ.टी.), मुम्बई के विशेषज्ञों के एक दल द्वारा 20 मार्च, 2012 को मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़ में 'बौद्धिक सम्पदा जागरुकता' के संबध में एक कार्यशाला आयोजित की गई। इस कार्यशाला में बौद्धिक संपदा अधिकारों, पेटेंटिंग और पौधा किस्म व कृषक अधिकार संग्क्षण से संबंधित ब्यौरों पर चर्चा की गई। निदेशालय के वैज्ञानिकों और तकनीकी स्टाफ ने इस कार्यशाला में भाग लिया।

बौद्धिक सम्पदा जागरुकता के संबंध में कार्यशाला के लिए केन्द्रीय कपास प्रौद्यौगिकी अनुसंधान संस्थान, मुम्बई के विशेषज्ञ

'वस्तुओं, कार्यों और परामर्श के लिए सार्वजनिक खरीद प्रबंधन' के संबंध में कार्यशाला (16-20 अप्रैल, 2012)

'वस्तुओं, कार्यों और परामर्श के लिए सार्वजनिक खरीद प्रबंधन' के संबध में एक कार्यशाला 16-20 अप्रैल, 2012 तक मूँगफली अनुसंधान निदेशालय में आयोजित की गई। मूँगफली अनुसंधान निदेशाय के वैज्ञानिकों और अन्य तकनीकी स्टाफ ने इस कार्यशाला में भाग लिया और श्री जी. सी. प्रसाद, वित्त व लेखा अधिकारी, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय इस पाठ्यक्रम के समन्वयकर्ता थे। मांगकर्ता (इंडेंटर) को खरीद नियमों और विनियमों से अवगत कराने के उद्देश्य से वस्तुओं, कार्यों और परामर्श के लिए सार्वजनिक खरीद प्रबंध के संबंध में विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान दिए गए।

निदेशक, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, कार्यशाला में प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए

पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण और डी.यू.एस. परीक्षण के संबंध में एक अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम (10-11 मई, 2012)

पादप किस्मों और किसानों के अधिकारों का संरक्षण तथा डी.यू.स. परीक्षण के संबंध में एक अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम 10-11 मई, 2012 को मूँगफली अनुसंधान निदेशालय में आयोजित किया गया। डॉ. राधाकृष्णन टी., प्रधान वैज्ञानिक, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय प्रशिक्षण के लिए पाठ्यक्रम निदेशक तथा डॉ. आई. यू. ध्रुज, (अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक, जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय, जूनागढ़) मुख्य अतिथि थे। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में कुल 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय के सभी वैज्ञानिकों और तकनीकी स्टाफ ने भी इस कार्यक्रम में सक्रिय रुप से भाग लिया। पादप किस्मों और किसानों के अधिकारों का संरक्षण तथा डी.यू.एस. से संबंधित विषयों पर विभिन्न व्याख्यान दिए गए। पादप आनुवंशिक संसाधनों, प्रजातियों और किस्मों के बौद्धिक संपदा अधिकारों के संरक्षण के लिए, भारत सरकार के अधिनियमों के संबंध में प्रभावकारी चर्चा की गई। प्रतिभागियों को पादप किस्मों और किसानों के अधिकारों का संरक्षण तथा डी.यू.एस. परीक्षण के विभिन्न पहलुओं की जानकारी दी गई।

पादप किस्मों और कृषक अधिकारों का संरक्षण तथा डी.यू.एस. परीक्षण के संबंध में प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घघाटन सत्र

'अच्छी कृषि पद्धतियों और एफ्लाटॉक्सिन-मुक्त मूँगफली का उत्पादन' के संबंध में एक कार्यशाला (5 जून, 2012)

'अच्छी कृषि पद्धतियों और एफ्लाटॉक्सिन-मुक्त मूँगफली का उत्पादन' के संबंध में एक कार्यशाला 5 जून, 2012 को मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़ में आयोजित की गई। इस कार्यशाला में कुल 106 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिनमें 73 मूँगफली उत्पादक, मूँगफली प्रसंस्करण यूनियों के 13 प्रतिनिधि और 20 वैज्ञानिक तथा तकनीकी कार्मिक थे। श्री पी. पी. तिरुमलाईसामी, वैज्ञानिक, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय इस प्रशिक्षण के लिए पाठ्यक्रम समन्वयकर्ता थे।

डॉ. आई. यू. ध्रुज, अतिरिक्त अनुसंधान निदेशक, जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय, जूनागढ़ और उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि ने एफ्लाटॉक्सिन संदूषण, जो भारत से मूँगफली के निर्यात में वृद्धि करने में एक मुख्य बाधा है, पर अपनी चिंता प्रकट करते हुए प्रतिभागियों से अनुरोध किया कि वे अच्छी कृषि पद्धतियां (जी. ए. पी.), अच्छी भंडारण पद्धतियां (जी. एस. पी.) और अच्छी विनिर्माण पद्धतियाँ (जी. एम. पी.) अपनाकर एफ्लाटॉक्सिन-मुक्त मूँगफली का उत्पादन करने के लिए इस कार्यशाला का पूरा लाभ उठाएँ।

डॉ. जे. वी. मिश्र, निदेशक, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय ने 'मूँगफली में एफ्लाटॉक्सिन का खतरा : चिंतन के कुछ मुद्दे' के संबंध में अपने व्याख्यान में मानव और पशु स्वास्थ्य पर एफ्लाटॉक्सिन के प्रभाव, और मूँगफली में एफ्लाटॉक्सिन संदूषण पर विश्व में विनियमों तथा प्रबंधन पद्धतियों के बारे में बताया ताकि एफ्लाटॉक्सिन संदूषण को न्यूनतम किया जा सके।

उद्घाटन सत्र के पश्चात् विशेषज्ञ वैज्ञानिकों, मूँगफली के उत्पादकों और मूँगफली प्रसंस्करण इकाईयों के प्रतिनिधियों के बीच परस्पर चर्चा हुई। इसके बाद, विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा 'अच्छी फसल पद्धतियों और एफ्लाटॉक्सिन-मुक्त मूँगफली का उत्पादन करने की प्रौद्योगिकियों' के संबंध में व्याख्यान दिए गए। मूँगफली की खेती में अच्छी फसल पद्धतियों के संबंध में एक प्रदर्शनी भी लगाई गई। इस कार्यशाला ने एफ्लाटॉक्सिन के मुद्दे का समाधान करने के लिए मूँगफली के उत्पादकों, प्रसंस्करणकर्ताओं और व्यापारियों के लिए एक मंच के रुप में कार्य किया।

(a) प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्धघाटन सत्र; (b) प्रतिभागी मूँगफली अनुसंधान निदेशालय की प्रौद्योगिकियों में रुचि लेते हुए

संस्थान के सेमिनार

वक्ता	शीर्षक	तारीख
प्रो. आर. के. पाठक, पूर्व निदेशक, सी.आई.एस.एच., लखनऊ	सतत बागबानी के लिए 'जैविक कृषि'	3 जनवरी, 2012
डॉ. एम. जे. मोदाइल, सदस्य, ए. एस. आर. बी.	'एक एकड भूमि और पशुओं से प्रेरणा'	9 जनवरी, 2012
डॉ. सुरेश वालिया, प्रोफेसर, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	'फसल और मानव स्वास्थ्य के लिए जैव-सक्रिय प्राकृतिक उत्पाद'	19 अप्रैल, 2012
डॉ. ज्ञान प्रकाश मिश्र, वरिष्ठ वैज्ञानिक, पादप प्रजनन, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय	'चिन्हक (मार्कर) की सहायता से पौधों में चयन'	19 मई, 2012
डॉ. जितेन्द्र भूषण मिश्र, निदेशक, मूँगफली अनुसंधान निदेशालय जूनागढ़	'मूँगफली में एफ्लाटॉक्सिन संदूषण: चिन्तन के कुछ मुद्दे'	21 मई, 2012

विशेष आगन्तुक

डॉ. एम. जे. मोदाइल, सदस्य, कृषि वैज्ञानिक चयन मण्डल, नई दिल्ली 9 जनवरी, 2012 को इस निदेशालय में पधारे

डॉ. दिलीप कुमार अरोड़ा, निदेशक, राष्ट्रीय कृषि उपयोगी सूक्ष्मजीव ब्यूरो,मऊ 9 जनवरी, 2012 को इस निदेशालय में पधारे

वार्षिक खरीफ मूँगफली कार्यशाला (22-24 अप्रैल 2012)

वार्षिक खरीफ मूँगफली कार्यशाला का आयोजन आचार्य एन. जी. रंगा कृषि विश्वविद्यालय, तिरुपति, आंध्र प्रदेश के क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र में 22-24 अप्रैल 2012 तक आयोजित किया गया। 22 अखिल भारतीय समन्वित मूँगफली अनुसंधान परियोजना केन्द्रों तथा विभिन्न केन्द्रीय व राज्य सरकार की शाखाओं से लगभग 100 प्रतिनिधियों ने इस कार्यशाला में भाग लिया। डॉ. टी. गिरिधर कृष्ण (एसोसिएट निदेशक, अनुसंधान), क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केन्द्र, तिरुपति ने सभा का स्वागत किया। डॉ. जितेन्द्र भूषण मिश्र, निदेशक, डी.जी.आर. ने अपने भाषण में ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना अवधि के दौरान एआईसीआरपी-जी की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला तथा बारहवीं पंचवर्षीय योजना अवधि हेतु प्रमुख अनुसंधान आयामों को प्रस्तुत किया। उन्होने अनुसंधान क्षेत्रों जैसेकि लधु सिंचाई के माध्यम से बढ़ती इनपुट उपयोग दक्षता, नैनो प्रोद्योगिकी, बीज कैप्सूलीकरण, ताजा बीज सुसुप्तता, कम तापमान सहिष्णुता, पर्यावरण के अनुकूल कीट प्रबंधन तथा जलवायु परिवर्तन इत्यादि के समाधान एआईसीआरपी-जी के माध्यम से वारहवीं पंचवर्षीय योजना में निकालने की आवश्यकता पर बल दिया। निदेशक डी.जी.आर. ने यह भी बताया कि ग्यारहवीं पंचवर्षीय योजना अवधि के दौरान 18 किस्में जारी करने के अलावा 4000 जननद्रव्यो तथा 40 जंगली कल्टीवार को भी संरक्षित किया गया।

अन्य प्रतिभागियों जिन्होंने इस कार्यशाला में अपने विचार प्रस्तुत किये उनमे प्रमुख थे डॉ. एस. एफ. डिसूज़ा, बी.ए.आर. सी., मुंम्बई; डॉ. एस. एन. निगम, इक्रीसैट; डॉ. एन. वी. नायडू, एस. वी. कृषि कॉलेज, तिरुपति; डॉ. डी. श्रीनिवासलु, पशुचिकित्सा विज्ञान कॉलेज, तिरुपति; डॉ. ए. पद्मराजु, आचार्य एन. जी. रंगा कृषि विश्वविद्यालय, हैदराबाद; डॉ. डी. वी. सिंह, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली; डॉ. पी. वी. रेड्डी, क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केन्द्र, तिरुपति एवं डॉ. आर. सुधाकर राव, आचार्य एन. जी. रंगा कृषि विश्वविद्यालय, हैदराबाद।

वार्षिक खरीफ मूँगफली कार्यशाला का उद्घाटन

सम्मेलनों/कार्यशालाओं/सेमिनारों/संगोष्ठियों/प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भागीदारी

नाम	कार्यक्रम	स्थान	तारीख
डॉ. के. के. पाल, डॉ. तिरुमलईसामी पी.पी. श्री हरीश जी., श्री अजय साहा, डॉ. अजय बी. सी., डॉ. नरेन्द्र कुमार और डॉ. मनेश डागला	'पादप किस्मों और कृषक के अधिकारों का संरक्षण, और डी.यू.एस. परीक्षण' के संबंध में प्रशिक्षण कार्यक्रम	मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़	27 और 28 जनवरी 2012
डॉ. राधाकृष्णन टी.	'सामरिक प्रतिस्पर्धी और सहयोगात्मक लाभ के लिए बौद्धिक सम्पदा का उपयोग' के संबंध में प्रशिक्षण कार्यक्रम	भारतीय प्रबंध संस्थान, अहमदाबाद	9 से 11 फरवरी 2012
डॉ. एन. के. जैन	एच. वाई. पी. एम. के प्रभारी हेतु 'पी.एम.ई. सैल के लिए सुग्रहीकरण (सेंसीटाइजेशन) एवं प्रशिक्षण कार्यशाला'	सी. आइ. एफ. ई., मुंबई	2 फरवरी, 2012
डॉ. चुनीलाल	परिणाम फ्रेमवर्क दस्तावेज (आर. एफ.डी.) उन्मुखी बैठक	कृषि भवन, नई दिल्ली	21 फरवरी, 2012
डॉ. एच. एन. मीणा	'कार्बन विविक्तीभवन और कार्बन का व्यापर' के संबंध में राष्ट्रीय प्रशिक्षण	इक्रीसैट, आंध्रप्रदेश	6 से 17 फरवरी, 2012
श्री नटराज एम. वी.	'सूक्ष्म कृषि और कीट प्रबंधन' के संबंध में सी. ए. एफ. टी. प्रशिक्षण	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, तमिलनाडु	8 से 28 फरवरी, 2012
श्री नटराज एम. वी.	एस. ए. यू. - आई. सी. ए. आर. - सी. आई. आई. क्षेत्रीय उद्योग बैठक	आणंद कृषि विश्वविद्यालय, आणंद	16 अप्रैल, 2012
डॉ. पी.पी. तिरुमलईसामी, डॉ. प्रसन्ना होलाजेर, श्री नटराज एम. वी. और डॉ. कुलदीप एस. जादोंन	बौद्धिक सम्पदा जागरुकता के संबंध में कार्यशाला	मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़	20 मार्च, 2012
डॉ. कुलदीप एस. जादोंन और डॉ. पी. पी. तिरुमलाईसामी	'खाद्य सुरक्षा के लिए पादप रोगविज्ञान' के संबंध में वैश्विक सम्मेलन	महाराणा प्रताप कृषि एवं प्राद्यौगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर	10 से13,जनवरी, 2012
डॉ. पी.पी. तिरुमलईसामी	भारत-कोरियाई सम्मेलन	अविनाशीलिंगम विश्वविद्यालय, कोयम्बेतूर, तमिलनाडु	9 और 10 फरवरी, 2012
डॉ. अजय साहा	'सब्जियों, फलों और गैर-खाद्य फसलों से स्वास्थ्य लाभ के लिए फाइटोस्यूटिकल्स' के संबंध में कार्यशाला	भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली	21 से 23 मार्च, 2012
डॉ. के. चक्रवर्ती और डॉ. के. ए. कालरिया	'परिवर्तनशील जलवायु स्थितियों के अधीन सतत फसल उत्पादकता में क्रियात्मक और आण्विक हस्तक्षेप' के संब्रंध में आंचलिक सेमिनार	औषधीय व सुगंधित पादप अनुसंधान निदेशालय, आणंद	17 जनवरी, 2012
डॉ. नारायणन जी. और डॉ. अजय साहा	अम्बुजा सीमेंट फाउंडेशन द्वारा कृषि विज्ञान केन्द्र, जूनागढ़ में किसान सेमिनार	कृषि विज्ञान केन्द्र, कोडीनार, गुजरात	6 जनवरी, 2012
डॉ. नारायणन जी. और डॉ. अजय साहा	जैड. टी. एम.-बी. पी. डी. (पश्चिमी जोन) वार्षिक वैठक एवं कार्यशाला	केन्द्रीय कपास प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, मुंबई	13 और 14 जनवरी, 2012

हमारे नए सहकर्मी

डॉ. रणजीत सिंह यादव ने 10 अप्रैल, 2012 को वरिष्ठ वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान) के रुप में कार्यभार ग्रहण किया। मूँगफली अनुसंधान निदेशालय में कार्यभार ग्रहण करने से पहले वे एस. डी. कृषि विश्वविद्यालय, सरदार कृषि नगर, दांतीवाड़ा में सहायक अनुसंधान वैज्ञानिक के पद पर कार्यरत थे।

डॉ. राम अवतार जाट ने 7 मई, 2012 को वरिष्ठ वैज्ञानिक (सस्य विज्ञान) के रुप में कार्यभार ग्रहण किया। मूँगफली अनुसंधान निदेशालय में कार्यभार ग्रहण करने से पहले वे इक्रीसैट, हैदराबाद में प्रति-नियुक्ति पर अतिथि - वैज्ञानिक (फसल-मॉडेलिंग) के रुप में और नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी में सहायक-प्रोफेसर (सस्य विज्ञान) के पद पर कार्यरत थे।

डॉ. ज्ञान प्रकाश मिश्र ने 16 मई, 2012 को वरिष्ठ वैज्ञानिक (पादप प्रजनन) के रुप में कार्यभार ग्रहण किया मूँगफली अनुसंधान निदेशालय में कार्यभार ग्रहण करने से पहले वे रक्षा उच्च तुंगता अनुसंधान संस्थान (डी. आई. एच. ए. आर.), डी. आर. डी. ओ., लेह-लद्दाख, जम्मू एवं कश्मीर में वैज्ञानिक 'सी' के पद पर कार्यरत थे।

डॉ. अनीता मान ने 12 जून, 2012 को वरिष्ठ वैज्ञानिक (पादप कार्यिकी) के रुप में कार्यभार ग्रहण किया। मूँगफली अनुसंधान निदेशालय में कार्यभार ग्रहण करने से पहले वे एन. आई. आई. एल. एम. विश्वविद्यालय, कैथल, हरियाणा में सह-प्रोफेसर (जैव-प्रौद्योगिकी) एवं समन्वयकर्ता के पद पर कार्यरत थीं।

श्री दरवेश कुमार ने 29 जून, 2012 को प्रशासनिक अधिकारी के रुप में मूँगफली अनुसंधान निदेशालय में कार्यभार ग्रहण किया। मूँगफली अनुसंधान निदेशालय में कार्यभार ग्रहण करने से पहले वे दिल्ली पुलिस में एस.आइ. के पद पर कार्यरत थे।

मूँगफली अनुसंधान निदेशालय नए सहकर्मियों का स्वागत करता है और उनकी प्रगति व सफलता की कामना करता है।

पुरस्कार

डॉ. के. ए. कालरिया, डॉ. ए. एल. सिंह, डॉ. के. चक्रवर्ती, श्री पी. वी. जाला और श्री सी. बी. पटेल ने संयुक्त रुप से 17 जनवरी, 2012 को औषधीय और सुगंधित पादप अनुसंधान निदेशालय, आणंद में 'परिवर्तनशील जलवायु स्थितियों के अधीन सतत फसल उत्पादकता में क्रियात्मक और आण्विक हस्तक्षेप' के संबंध में हुए आंचलिक सेमिनार में 'उत्कृष्ट पोस्टर प्रस्तुति पुरस्कार' प्राप्त किया।

पदोन्नति

तकनीकी अधिकारी

नाम	पहले	अब
श्री के. एच. कोराडीया	टी4	टी5
श्री जे. जी. कालारिया	टी4	टी5
श्री जी. जे. सोलंकी	टी3	टी4
श्री ए. एम. वाखारिया	टी4	टी5
श्री पी. बी. गरचर	टी4	टी5
श्री सी. बी. पटेल	टी4	टी5

खेलों मे पुरस्कार

डॉ. कौशिक चक्रवर्ती (वैज्ञानिक, पादप कार्यिकी) और श्री जी. सी. प्रसाद (वित्त व लेखा अधिकारी) ने 13 से 17 फरवरी, 2012 तक केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में हुई आंचलिक खेल प्रतियोगिता में बैडमिंटन में रजत पदक प्राप्त किया।

केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में हुई आंचलिक खेल प्रतियोगिता के लिए मूँगफली अनुसंधान निदेशालय की खेल टीम

अतिथि

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का पंजाबराव देशमुख उत्कृष्ट महिला वैज्ञानिक पुरस्कार - 2010 प्राप्तकर्ता डॉ. एस. आदिलक्ष्मी (प्रधान वैज्ञानिक, पादप प्रजनन, ज्वार अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद) 7 अप्रैल 2012 को मूँगफली अनुसंधान निदेशालय में पधारीं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद पुरस्कार उपरांत दायित्व के अनुपालन हेतु, वे इस निदेशालय में महिला वैज्ञानिकों, महिला शोध सहयोगी व वरिष्ठ अनुसंधान अध्येताओं को प्रेरणा देने के लिए यहां पधारी थीं।

डॉ. एस. आदिलक्ष्मी (ज्वार अनुसंधान निदेशालय, हैदराबाद) वक्तव्य देते हुए

संपादक मंडल : रिंकू डे, ज्ञान प्रकाश मिश्र एवं जितेन्द्र भूषण मिश्र

फोटो : ए. एम. वखारिया

प्रकाशक : निदेशक

मूँगफली अनुसंधान निदेशालय, जूनागढ़ - 362 001 गुजरात

वेब साइट : www.nrcg.res.in ई-मेल : director@nrcg.res.in फैक्स : +91 0285 2672550 फोन : +91 0285 2673041, 2672461

मुद्रण : राधिका प्रिन्टर्स, अहमदाबाद मो. 90999 11136